SPECIMEN FORMAT FOR THESES OF MONTH

Faculty	:	School of Arts & Social Sciences
Department	:	Hindi
Branch/ Area:	:	Hindi Literature
Sub Subject Heading:	:	
Candidate's Name	:	Arunima A.M
Candidate's Address with email	:	Thondipuram Kandi House Thiruvode post Naduvannur via Pin: 673614 Kozhikode Kerala Email: ponnuarunima7@gmail.com
Title of the Thesis	:	ADHUNIK DALIT KAHANIYON MEIN STRI CHETANA (CHUNEE HUYI KAHANIYON KE VISHESH SANDARBH MEIN)
(i) In Roman Script		-
(ii) In Roman Script		
Nomenclature of Degree:	:	Ph.D.
Month & Year of Enrolment:	:	January, 2021
Month & Year of Registration:	:	January, 2021
Month &Year of Submission:	:	November 2024
Month &Year of Award	:	February, 2025
Name of Supervisor	:	Dr. Shobhana Kokkadan
Designation of Supervisor	:	Professor & Head, Dean of Arts and Social Sciences
Centre/Department/School in which Research was conducted	:	Department of Hindi, School of Arts and Social Sciences
University's Name & Address	:	Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women, Coimbatore – 43.

Abstract within 300 words: 'आधुनिक दलित कहानियों में स्त्री चेतना (चुनी हुई कहानियों के विशेष संदर्भ में)' शीर्षक यह शोध आलेख आधुनिक दलित साहित्य में स्त्री चेतना के उभार को समझने की कोशिश करता है, विशेष रूप से दलित महिला पात्रों के दृष्टिकोण से। दलित साहित्य में जहाँ एक ओर पुरुषों की दीन-हीन स्थिति और संघर्ष को चित्रित किया गया है, वहीं स्त्रियों की स्थिति, उनकी समस्याएँ, और उनका अस्तित्व संघर्ष भी महत्वपूर्ण मुद्दा है। इस संदर्भ में, चुनी हुई दलित कहानियाँ, जो महिला पात्रों के जीवन और उनके अनुभवों को उजागर करती हैं, विशेष रूप से ध्यान आकर्षित करती हैं। लेख में दलित महिला के सामाजिक, मानसिक और शारीरिक उत्पीड़न, उनके अधिकारों की सीमाओं, और उन्हें प्राप्त स्वतंत्रता के संघर्ष को प्रस्तुत किया गया है। इसके साथ ही, यह भी दिखाया गया है कि इन कहानियों में स्त्री पात्रों की चेतना किस प्रकार जागृत होती है और वे अपने अस्तित्व के लिए किस तरह से प्रतिरोध करती हैं।

इस अध्ययन में ऐसे दलित लेखकों द्वारा लिखी गई कुछ प्रमुख कहानियों का विश्लेषण किया जाएगा, जो स्त्री चेतना और उनके आत्म-सम्मान की ओर बढ़ते कदमों को दर्शाती हैं। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य दलित महिलाओं की विशिष्ट दृष्टि को उजागर करना है, जिसे समाज में सामान्यतः नज़रअंदाज़ किया जाता है । भारतीय समाज में दलित महिलाओं की दुर्दशा, महिलाओं के आत्म-विकास में रुकावट डालने वाली सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक और धार्मिक स्थितियाँ, आत्म-सम्मान के लिए उनके संघर्ष, लैंगिक असमानता और मानसिक चेतना को उजागर करते हुए, यह अध्ययन भारत में दलित महिलाओं की स्थिति को समझने और उनके आत्म-साक्षात्कार के उपायों की खोज करने का प्रयास करता है। यह उनके आत्म-सम्मान के साथ जीवन स्थापित करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहलुओं को सामने लाता है।

Major objectives:

1. दलित महिलाओं की सामाजिक और सांस्कृतिक स्थिति का विश्लेषण: अध्ययन का पहला उद्देश्य दलित महिलाओं की सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्थिति को समझना है, जैसा कि आधुनिक दलित कहानियों में प्रस्तुत किया गया है।

2. स्त्री चेतना का विकास: चुनी हुई दलित कहानियों में स्त्री चेतना के उभार और विकास को स्पष्ट रूप से सामने लाना, साथ ही यह जानना कि ये महिलाएं किस प्रकार अपनी पहचान और स्वतंत्रता की दिशा में संघर्ष करती हैं।

3. लैंगिक असमानता और उत्पीड़न का विश्लेषण: दलित महिलाओं द्वारा सामना किए जाने वाले लैंगिक असमानता, उत्पीड़न और शोषण के विभिन्न रूपों का अध्ययन करना और यह समझना कि ये कहानियाँ इन मुद्दों को किस प्रकार उजागर करती हैं।

4. आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता की खोज: दलित महिलाओं के आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता की खोज के संघर्ष को दिखाना, और यह समझना कि वे किस प्रकार अपनी पहचान और अधिकारों के लिए संघर्ष करती हैं।

5. आध्यात्मिक और मानसिक चेतना का विश्लेषण: इन कहानियों में स्त्री पात्रों की मानसिक और आध्यात्मिक चेतना के विकास का अध्ययन करना, और यह देखना कि यह चेतना उनके जीवन में परिवर्तन और आत्म-साक्षात्कार का कारण कैसे बनती है।

6. दलित महिला लेखन की विशेषताओं की पहचान: दलित महिला लेखकों द्वारा लिखी गई कहानियों में स्त्री चेतना के विभिन्न पहलुओं को उजागर करना और यह जानना कि उनके लेखन में किस प्रकार के विशेष संदर्भ और दृष्टिकोण प्रस्तुत किए जाते हैं।

Hypothesis:

1. दलित महिलाओं की स्त्री चेतना में परिवर्तन: यह परिकल्पना है कि आधुनिक दलित कहानियों में स्त्री पात्रों की चेतना का उभार और विकास देखा जा सकता है, जो उन्हें सामाजिक, सांस्कृतिक, और लैंगिक उत्पीड़न के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित करता है।

2. आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता की ओर यात्रा: दलित महिलाओं के आत्म-सम्मान और स्वतंत्रता के संघर्ष को इन कहानियों में महत्वपूर्ण रूप से दर्शाया जाता है। यह परिकल्पना है कि इन पात्रों का आत्म-साक्षात्कार और आत्म-निर्णय की प्रक्रिया उनके जीवन में गहरे परिवर्तन लाती है।
3. स्त्री के प्रति समाज की नजरिया और उत्पीड़न: यह मान्यता है कि दलित समाज में महिलाओं के प्रति पूर्वाग्रह और उत्पीड़न को स्पष्ट रूप से इन कहानियों में चित्रित किया गया है, और स्त्री पात्रों के संघर्ष का मुख्य कारण यह उत्पीड़न ही है।
4. दलित महिलाओं का सशक्तिकरण: यह परिकल्पना है कि इन कहानियों में दलित महिलाएँ न केवल अपने अधिकारों के लिए संघर्ष करती हैं, बल्कि वे समाज में अपनी पहचान और स्थान को पुनः स्थापित करने के लिए भी सक्रिय रूप से सशक्त होती हैं।

इस प्रकार, शोध में इन परिकल्पनाओं का परीक्षण किया जाएगा, ताकि यह समझा जा सके कि दलित साहित्य में स्त्री चेतना का चित्रण किस प्रकार दलित महिलाओं के जीवन, संघर्ष और सशक्तिकरण को प्रभावित करता है।

Methodology:

1. शोध का उद्देश्य और प्रश्न

- आधुनिक दलित कहानियों में स्त्री चेतना का कैसे चित्रण हुआ है।
- आधुनिक दलित साहित्य में स्त्री पात्रों की स्थिति और चेतना में कौन से बदलाव आए हैं और कैसे ये बदलाव स्त्री के संघर्ष, सशक्तिकरण और समाज में उसकी भूमिका को दर्शाते हैं?

2. साहित्यिक दृष्टिकोण

- **दलित साहित्य का दृष्टिकोण:** दलित साहित्य के सिद्धांतों का उपयोग करते हुए, आप यह समझ सकते हैं कि दलित महिला पात्रों के अनुभव और संघर्ष को कैसे व्यक्त किया गया है।

- **स्त्रीवादी दृष्टिकोण (Feminist Perspective):** स्त्री चेतना को समझने के लिए स्त्रीवादी सिद्धांतों का पालन करना आवश्यक होगा। यहां पर विशेष रूप से भारतीय स्त्रीवादी दृष्टिकोण को लागू किया जा सकता है।
- **सामाजिक-राजनीतिक संदर्भ:** दलित स्त्री के सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक स्थिति का विश्लेषण करते हुए, यह देखा जाएगा कि किस प्रकार की मानसिकता और संघर्ष इन कहानियों में उभरते हैं।

3. कहानियों का चयन

- यह चरण महत्वपूर्ण है, क्योंकि मैंने चुनी हुई दलित कहानियों का चयन ऐसे किया है कि जिनमें स्त्री पात्र प्रमुख भूमिका में हों।
- मैंने उन कहानियों का चयन किया जो समकालीन दलित समाज में स्त्री चेतना और संघर्ष को अभिव्यक्त करती हों। जैसे, उपन्यास, कहानियाँ या लघु कथाएँ जो दलित महिलाओं के अधिकार, आत्मसम्मान, और उनके संघर्षों को व्यक्त करती हैं।
- उदाहरण: शंतेश्वरी, कुसुम वर्मा, उमा शंकर या अन्य लेखक/लेखिकाओं की कहानियाँ जिनमें दलित महिला पात्र की स्थिति पर ध्यान दिया गया है।

4. विश्लेषणात्मक विधियाँ

- **सामाजिक और सांस्कृतिक विश्लेषण**: कहानियों के पात्रों, उनके समाज, और उनके संघर्षों का गहन विश्लेषण। किस प्रकार से स्त्री चेतना की अभिव्यक्ति इन कहानियों में होती है, इसका विश्लेषण करना।
- **कंटेंट विश्लेषण** : कहानियों में व्यक्त विचारों, विचारधाराओं और पात्रों के विकास की जांच करना। किस प्रकार की चेतना और पहचान का चित्रण किया गया है।

- **Narrative analysis**: कहानी के कथानक और पात्रों के माध्यम से स्त्री चेतना के तत्वों का विश्लेषण करना।

5. डेटा संग्रहण

- कहानियों का विस्तृत अध्ययन करना और इनकी संरचना, संवाद, घटनाओं और पात्रों के माध्यम से स्त्री चेतना का विश्लेषण करना।
- यदि उपलब्ध हो, तो **साक्षात्कार** (interviews) या **फ़ोकस समूह चर्चा** (focus group discussions) दलित स्त्री लेखकों, आलोचकों या साहित्यकारों से की जा सकती है, जो इस विषय पर गहरी जानकारी रखते हों।

6. **विश्लेषण की प्रक्रिया**

- **क्वालिटेटिव विश्लेषण)Qualitative Analysis)**: यह विशेष रूप से इस मामले में महत्वपूर्ण होगा, क्योंकि दलित साहित्य और स्त्री चेतना जैसे विषयों में गहरे अर्थ और सामाजिक संदर्भों की आवश्यकता होती है।
- प्रत्येक कहानी का पात्र, संवाद, घटना, और सामाजिक संदर्भ के आधार पर स्त्री चेतना का मूल्यांकन।
- लेखकों द्वारा चित्रित किए गए संघर्ष, सशक्तिकरण और सामाजिक बदलाव की प्रवृत्तियों का गहराई से विश्लेषण।

7. **निष्कर्ष**

- शोध में किए गए विश्लेषणों के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला जाएगा कि कैसे आधुनिक दलित कहानियाँ स्त्री चेतना का प्रतिनिधित्व करती हैं।

- यह भी देखा जाएगा कि इनमें स्त्री की स्थिति में कोई सकारात्मक बदलाव हुआ है या नहीं और सामाजिक बदलावों का उस पर क्या प्रभाव पड़ा है।

8. संदर्भ

- दलित साहित्य, स्त्रीवाद, और आधुनिक साहित्य से संबंधित पुस्तकें, लेख, शोध पत्र, और अन्य प्रमुख साहित्यिक कृतियाँ आपके अध्ययन के लिए संदर्भ के रूप में काम आएंगी।

  इस तरह की methodology से आप अपने शोध में एक व्यवस्थित और गहरे विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण से दलित साहित्य और स्त्री चेतना के विषय को समझ सकते हैं।

Findings:

- स्त्री चेतना के विविध रूपों को लेकर अध्ययन करना अपने आप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।
- स्त्री चेतना, स्त्री चिंतन से जुड़ा एक पहलू है, जिसके केन्द्र में उनके सम्पूर्ण अस्तित्व को पहचानने की विचारधारा है। इस शोध की मुख्य उपलब्धि दलित महिला को समाज में उसकी पहचान और अधिकारों को पूर्ण रूप से स्थापित करने तथा उसे एक इंसान के रूप में देखने और स्वीकार करने में सक्षम बनाना है।
- दलित लेखकों द्वारा चित्रित और चर्चित दलित महिला पात्रों का संघर्ष, प्रतिरोध और अस्मिता अपने आप में अद्वितीय है, जो सशक्त साहित्य की एक सशक्त धारा के रूप में बहती और चर्चा में है। इससे शोध का क्षेत्र निश्चित ही अपने लक्ष्य को प्राप्त करता है।
- दलित स्त्री अपनी अस्मिता के तहत अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रही है, जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाएगी।
- दलित साहित्यकारों ने अपनी कहानियों के माध्यम से स्त्री चेतना के विभिन्न रूपों, समस्याओं, प्रतिरोध एवं संघर्षों को विभिन्न परिवेश के साथ चित्रित किया हैं, अतः चर्चित कहानियों में

दलित स्त्री चेतना के विविध रूपों को प्रस्तुत करने में दलित लेखकों ने काफी सफलता प्राप्त हुई है।

- अस्पृष्यता की भावनाओं को दलित कहानीकारों ने अपनी कहानियों के पात्रों के माध्यम से विरोध की पुरजोर कोशिश की है। प्रस्तुत कहानियों में छुआ-छूत के विविध रूपों को देख सकते है।
- दलित महिलाओं की आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक स्थिति दलित पुरुषों की तुलना में कम है।
- दलित कहानियों में दलित महिलाओं को पुरुषों से अधिक समस्याओं और कठिनाईयों का सामना करना पड़ता है।
- दलित स्त्री की समस्याओं का हल व्यक्तिगत और सार्वजनिक प्रयास से ही सम्भव हो सकता है।
- आधुनिक कहानियों में सभी दलित महिला पात्र अपने जागरूक कार्यों के माध्यम से पितृसत्तात्मक आधिपत्य को चुनौती देते हैं और दलित महिलाओं की जागरूक प्रकृति को उजागर करते हैं।
- दलित स्त्री चतुर्दिक दिशाओं में सक्रिय है, उसकी दृष्टि अतीत से लेकर यथार्थ के थपेडों से प्रति पल बदलते हुए वर्तमान और वर्तमान के लिए उत्तरदायी कारकों तक से अछूती नहीं है, यहाँ तक कि समय की गर्त में छिपे हुए भविष्य तक वह अपनी दृष्टि पहुँचाने का यत्न कर रही है।

Examiners

Internal Examiner: Dr. Krishna kumar Srivastava
Associate Professor & HOD Hindi
Asansol Girls College, Asansol (W.Bengal)
713304

External Examiner: Dr. Shekhar
Professor & Head, Department of Hindi
Bangalore University
Bangalore 560056